Anusandhanvallari
Vol 2023, No.1
December 2023
ISSN 2229-3388

नालंदा एवं विक्रमशिला महाविहारों में शिक्षण प्रविधियाँ – बौद्ध धर्म के आलोक में

[1]डॉ कामाख्या नारायण तिवारी, [2]प्रोफेसर इंद्र नारायण सिंह

[1]सह आचार्य, बौद्ध-अध्ययन विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
[2]आचार्य, बौद्ध-अध्ययन विभाग ,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सारांश: प्रस्तुत शोध पत्र नालंदा और विक्रमशिला महाविहारों की शिक्षण प्रविधियों का बौद्ध धर्म के दार्शनिक आलोक में तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। ये दोनों महाविहार भारतीय उपमहाद्वीप के सबसे प्रभावशाली शैक्षणिक केंद्र थे, जिन्होंने न केवल बौद्ध शिक्षा को आकार दिया बल्कि विश्वव्यापी ज्ञान परंपरा की स्थापना की। नालंदा (5वीं-12वीं शताब्दी) मुख्यतः महायान बौद्ध दर्शन, तर्कशास्त्र एवं अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक संवाद के लिए प्रसिद्ध था, जबकि विक्रमशिला (8वीं-12वीं शताब्दी) तांत्रिक बौद्ध धर्म और गहन दार्शनिक अनुसंधान का केंद्र था। इन संस्थानों की शिक्षण पद्धतियाँ करुणा, प्रज्ञा, तर्कशीलता और समग्र व्यक्तित्व विकास पर आधारित थीं, जो आधुनिक शिक्षाशास्त्र के लिए आज भी प्रासंगिक हैं।

बीज शब्द : नालंदा, विक्रमशिला, महाविहार, महायान, बौद्ध दर्शन, तर्कशास्त्र, शिक्षण प्रविधि, ज्ञान परंपरा।

1. प्रस्तावना

1.1 नालंदा एवं विक्रमशिला का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

नालंदा महाविहार की स्थापना गुप्त सम्राट कुमारगुप्त प्रथम द्वारा ४२७ ईस्वी में हुई, जो लगभग आठ शताब्दियों तक (४२७-११९७ ईस्वी) संचालित रहा। (विकिपीडिया २०२५)

यह बिहार के राजगृह (आधुनिक राजगीर) के निकट स्थित था और इसे विश्व का प्रथम आवासीय विश्वविद्यालय माना जाता है। विक्रमशिला महाविहार की स्थापना पाल वंशीय शासक धर्मपाल (७८३-८२० ईस्वी) द्वारा 8वीं शताब्दी में हुई। यह गंगा के तट पर भागलपुर जिले के अंतीचक गाँव में स्थित था।

दोनों संस्थान बौद्ध धर्म के स्वर्ण युग के दौरान विकसित हुए, जब भारत एशियाई संस्कृति और ज्ञान का प्रमुख केंद्र था। नालंदा ने अधिक अंतरराष्ट्रीय प्रसिद्धि पाई, जबकि विक्रमशिला तांत्रिक बौद्ध धर्म के विशेषज्ञता केंद्र के रूप में उभरा।

1.2 बौद्ध शिक्षा-दर्शन की मूलभूत अवधारणाएँ

बौद्ध शिक्षा दर्शन बुद्ध के चतुरार्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग, प्रतीत्यसमुत्पाद और करुणा-प्रज्ञा के सिद्धांतों पर आधारित था। इसका मुख्य उद्देश्य दुख से मुक्ति और निर्वाण की प्राप्ति था। बौद्ध शिक्षा में प्रज्ञा (बुद्धि) और करुणा (दया) दोनों को समान महत्व दिया गया। त्रिपिटक (विनय, सूत्र, अभिधम्म) शिक्षा का आधार था, जो न केवल धार्मिक ग्रंथों को शामिल करता था बल्कि तर्क, चिकित्सा, खगोल, गणित जैसे लौकिक विषयों को भी समेटे हुए था। शिक्षण पद्धति में वाद-विवाद, प्रश्नोत्तर और व्यावहारिक अनुभव को प्राथमिकता दी गई। (एसआर गोयल,1987)

1.3 शोध का उद्देश्य एवं महत्त्व

इस शोध का उद्देश्य नालंदा एवं विक्रमशिला की शिक्षण प्रविधियों का तुलनात्मक अध्ययन करना और उनकी आधुनिक प्रासंगिकता को स्थापित करना है। यह अध्ययन निम्नलिखित बिंदुओं पर केंद्रित है:

- दोनों महाविहारों की शिक्षण पद्धतियों की विशेषताओं का विश्लेषण
- बौद्ध दर्शन के शैक्षणिक प्रभावों की समीक्षा
- समकालीन शिक्षा प्रणाली के लिए इन पद्धतियों की उपयोगिता का मूल्यांकन

1.4 पूर्ववर्ती शोध एवं साहित्य समीक्षा

नालंदा-विक्रमशिला पर व्यापक शोध कार्य हुआ है। चीनी यात्री ह्वेन त्सांग और इत्सिंग के विवरण, तिब्बती स्रोत तारानाथ के अभिलेख, तथा आधुनिक पुरातत्ववेत्ताओं के अनुसंधान से इन संस्थानों की संपूर्ण तस्वीर उभरती है। समकालीन शोधकर्ताओं ने इन संस्थानों के अंतरराष्ट्रीय प्रभाव, शिक्षण पद्धति और सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर विस्तृत अध्ययन किया है। (ह्वेन त्सांग,२०२५)

2. नालंदा एवं विक्रमशिला महाविहारों की संरचना

2.1 स्थापत्य एवं भौतिक संरचना

नालंदा २३ हेक्टेयर क्षेत्र में विस्तृत था, जिसमें अनेक विहार, चैत्य, स्तूप एवं पुस्तकालय निर्मित थे। इसमें ३०० कक्ष थे जो शिक्षण एवं निवास दोनों के लिए उपयोग होते थे। प्रसिद्ध धर्मगंज पुस्तकालय में ९० लाख से अधिक पांडुलिपियाँ संग्रहीत थीं। विक्रमशिला की संरचना केंद्रीय स्तूप के चारों ओर १०८ मंदिरों की व्यवस्था के साथ की गई थी। इसमें ५३ मंदिर गुह्यसमाज तंत्र के अध्ययन के लिए समर्पित थे। दोनों संस्थान दीवारों से घिरे हुए थे और इनमें उद्यान, जल निकासी एवं सुरक्षा की उत्तम व्यवस्था थी।(बर्ग्रेस १८८३) (आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया २०११)

2.2 प्रशासनिक व्यवस्था एवं संघ की भूमिका

दोनों महाविहारों का प्रशासन बौद्ध संघ द्वारा संचालित होता था। नालंदा में प्रमुख आचार्य (उपाध्यक्ष) और विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ आचार्य होते थे। संघीय नियमों के अनुसार शिक्षक और छात्र दोनों को कड़े अनुशासन का पालन करना पड़ता था। विक्रमशिला में १०८ पंडित और १६० शिक्षक नियुक्त थे, जो राजा रामपाल के समय १००० छात्रों को शिक्षा देते थे। प्रशासनिक निर्णय सामूहिक चर्चा और मतदान से लिए जाते थे, जो प्रारंभिक लोकतांत्रिक शिक्षा प्रणाली का उदाहरण था। (नालंदा महाविहार,२०२५)

2.3 शिक्षण के लिए निर्मित पर्यावरणीय-सांस्कृतिक वातावरण

दोनों संस्थानों में शांति, अनुशासन और बौद्धिक चर्चा का वातावरण था। दैनिक दिनचर्या प्रार्थना, अध्ययन, वाद-विवाद और ध्यान से भरी होती थी। नालंदा में चीन, जापान, कोरिया, तिब्बत, श्रीलंका और दक्षिण-पूर्व एशिया के छात्र अध्ययन करते थे। यह बहुसांस्कृतिक वातावरण अंतरराष्ट्रीय संवाद को बढ़ावा देता था। विक्रमशिला में गहन तांत्रिक साधना और दार्शनिक मनन का वातावरण था। यहाँ की शिक्षा पद्धति अधिक गूढ़ और आंतरिक परिवर्तन पर केंद्रित थी।

3. बौद्ध शिक्षण-दर्शन की आधारभूमि

3.1 त्रिपिटक एवं विनय परंपरा का शैक्षिक प्रभाव

त्रिपिटक (तीन पिटक) - विनय पिटक, सूत्र पिटक और अभिधम्म पिटक - बौद्ध शिक्षा का आधार था। विनय पिटक में संघ के नियम, आचार संहिता और शिक्षक-शिष्य के कर्तव्य निर्धारित थे। यह न केवल धार्मिक अनुशासन बल्कि शैक्षणिक मर्यादा भी स्थापित करता था। सूत्र पिटक में बुद्ध के उपदेश और शिक्षण विधियों के उदाहरण मिलते हैं। अभिधम्म पिटक दार्शनिक विश्लेषण और तर्कशास्त्र का आधार प्रदान करता था। त्रिपिटक की अध्ययन पद्धति में स्मरण, मनन और निदिध्यासन के तीन चरण शामिल थे।

3.2 बौद्ध तर्कशास्त्र (हेतुविद्या) एवं वाद-परंपरा

हेतुविद्या (तर्कशास्त्र) बौद्ध शिक्षा की विशिष्टता थी, जो व्यावहारिक बुद्धि और विवेक को बढ़ावा देती थी। नालंदा में धर्मकीर्ति और दिग्नाग जैसे महान तर्कशास्त्री शिक्षा देते थे। वाद-विवाद (शास्त्रार्थ) की परंपरा से छात्रों में आलोचनात्मक चिंतन का विकास होता था। शास्त्रार्थ के चार प्रकार थे: वाद (शांतिपूर्ण चर्चा), जल्प (तर्कपूर्ण विवाद), वितंडा (विरोधी तर्क) और छल (भ्रामक तर्क)। यह पद्धति छात्रों को तर्कसंगत सोच और प्रभावी संवाद की क्षमता प्रदान करती थी।

3.3 करुणा एवं प्रज्ञा पर आधारित शिक्षण दृष्टिकोण

बौद्ध शिक्षा में प्रज्ञा (ज्ञान) और करुणा (दया) दोनों को समान महत्व दिया गया। प्रज्ञा का अर्थ केवल बौद्धिक ज्ञान नहीं बल्कि अंतर्दृष्टि और समझ था। करुणा सभी जीवों के दुख को समझना और उसे दूर करने का प्रयास था। यह दृष्टिकोण शिक्षा को केवल व्यक्तिगत उन्नति के लिए नहीं बल्कि समाज कल्याण के लिए उपयोग करने की प्रेरणा देता था। छात्रों में नैतिक चरित्र, सामाजिक जिम्मेदारी और मानवीय संवेदना का विकास होता था।(हार्वे, पी. २०१२)

4. नालंदा में शिक्षण प्रविधियाँ

4.1 अध्यापन पद्धतियाँ – व्याख्यान, संवाद एवं वाद-विवाद

नालंदा में शिक्षण की मुख्य विधियाँ व्याख्यान (उपदेश), संवाद (प्रश्नोत्तर) और वाद-विवाद (शास्त्रार्थ) थीं। आचार्य सबसे पहले विषय की व्याख्या करते थे, फिर छात्रों के साथ संवाद करते थे। नियमित शास्त्रार्थ सभाएँ होती थीं जहाँ छात्र अपने विचार प्रस्तुत करते थे। शिक्षण विधि में अनुकरण (गुरु के आचरण को देखकर सीखना), स्वाध्याय (स्वतंत्र अध्ययन), सामूहिक चर्चा और व्यावहारिक प्रशिक्षण शामिल था। प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत क्षमता के अनुसार शिक्षण दिया जाता था।

4.2 पाठ्यक्रम – बौद्ध धर्म, वेद, आयुर्वेद, गणित एवं खगोल

नालंदा का पाठ्यक्रम अत्यंत व्यापक था। मुख्य विषयों में महायान बौद्ध दर्शन, मध्यमिका, योगाचार, सर्वास्तिवाद शामिल थे। धर्मनिरपेक्ष विषयों में वेद, व्याकरण, तर्कशास्त्र, गणित, खगोल शास्त्र, आयुर्वेद, शिल्पकला और भाषा विज्ञान थे। चीनी यात्री ह्वेन त्सांग के अनुसार यहाँ १८ विषयों की शिक्षा दी जाती थी। पुस्तकालय में संस्कृत, पाली, प्राकृत और विदेशी भाषाओं के ग्रंथ उपलब्ध थे। छात्रों को अनुवाद कार्य भी सिखाया जाता था। (अशिकुज्ज़ामान, मो. एवं किरोन, मो. अशिकुज्ज़ामान खान एवं नासरीन, शमीमा. २०२५)

4.3 आचार्य-शिष्य परंपरा एवं अनौपचारिक शिक्षण

नालंदा में आचार्य-शिष्य संबंध अत्यंत गहरा और व्यापक था। आचार्य केवल ज्ञान प्रदाता नहीं बल्कि आध्यात्मिक गुरु, जीवन मार्गदर्शक और व्यक्तित्व निर्माता था। शिष्यों को गुरु की सेवा, अध्ययन सहायता और दैनिक कार्यों में सहयोग करना पड़ता था। अनौपचारिक शिक्षण में उद्यान में टहलते हुए चर्चा, सांध्य कालीन संवाद, व्यक्तिगत परामर्श और सामुदायिक गतिविधियाँ शामिल थीं। यह पद्धति सिद्धांत और व्यवहार के बीच सेतु का काम करती थी।(कुमार, पिंटू,२०११)

4.4 विदेशी छात्रों की भूमिका एवं अंतरराष्ट्रीय संवाद

नालंदा में १०,००० से अधिक छात्र थे, जिनमें से एक तिहाई विदेशी थे। चीन से ह्वेन त्सांग, इत्सिंग, कोरिया से वॉनहयो, जापान से दोशो, तिब्बत से शांतिरक्षित और श्रीलंका के छात्र अध्ययन करते थे। यह अंतरराष्ट्रीय उपस्थिति ज्ञान के आदान-प्रदान, भाषा विकास और सांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा देती थी। नालंदा के स्नातक विभिन्न देशों में जाकर बौद्ध धर्म और भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रचार करते थे।

5. विक्रमशिला में शिक्षण प्रविधियाँ

5.1 विशेषता – तंत्र, तर्क एवं वाद परंपरा

विक्रमशिला मुख्यतः तांत्रिक बौद्ध धर्म (वज्रयान) का केंद्र था। यहाँ गुह्यसमाज तंत्र, हेवज्र तंत्र और चक्रसंवर तंत्र की गहरी शिक्षा दी जाती थी। तंत्र में मंडल निर्माण, मंत्र साधना, देवता योग और चित्त की गूढ़ अवस्थाओं का अध्ययन शामिल था। तर्कशास्त्र में यहाँ उन्नत पाठ्यक्रम था, जिसमें धर्मकीर्ति, दिग्नाग और शांतरक्षित के ग्रंथों का गहन अध्ययन होता था। वाद परंपरा में नालंदा से भी अधिक कठोर मानदंड थे।

5.2 अध्यापन शैली – गूढ़ ग्रंथों का अध्ययन-मनन

विक्रमशिला में गूढ़ और जटिल ग्रंथों की शिक्षा व्यक्तिगत मार्गदर्शन से दी जाती थी। तांत्रिक ग्रंथों में छुपे अर्थों को समझाने के लिए आचार्य और शिष्य के बीच गहन व्यक्तिगत संपर्क आवश्यक था। शिक्षण में मनन (चिंतन), निदिध्यासन (गहरा ध्यान) और साक्षात्कार (प्रत्यक्ष अनुभव) के चरण शामिल थे। छात्रों को स्वयं खोजने और अनुभव करने की स्वतंत्रता दी जाती थी।

5.3 व्यावहारिक प्रशिक्षण एवं साधना की भूमिका

विक्रमशिला में सिद्धांत के साथ-साथ व्यावहारिक साधना पर जोर दिया जाता था। छात्रों को ध्यान, प्राणायाम, मंडल निर्माण, मंत्र जाप और विभिन्न योगिक प्रक्रियाओं में प्रशिक्षण दिया जाता था। यह प्रशिक्षण केवल बौद्धिक ज्ञान तक सीमित नहीं था बल्कि आंतरिक परिवर्तन और आध्यात्मिक उपलब्धि पर केंद्रित था। महासिद्धों (८४ सिद्ध) की परंपरा यहाँ जीवंत थी, जो अलौकिक शक्तियों और चमत्कारों के लिए प्रसिद्ध थे। छात्र इन सिद्धों से प्रत्यक्ष शिक्षा प्राप्त करते थे।

5.4 अनुशासन एवं संघीय जीवन की शिक्षण भूमिका

विक्रमशिला में अनुशासन अत्यंत कठोर था, विशेषकर तांत्रिक साधना के लिए। दैनिक दिनचर्या में प्रभाती ४ बजे से रात्रि १० बजे तक अध्ययन, ध्यान, श्रम और आत्म-निरीक्षण शामिल था। संघीय जीवन में सभी संपत्ति सामुदायिक थी और व्यक्तिगत आवश्यकताएं न्यूनतम रखी जाती थीं। अनुशासन का मुख्य उद्देश्य इंद्रिय नियंत्रण, मन की शुद्धता और आध्यात्मिक उन्नति था। छात्र अपने आचरण के लिए न केवल व्यक्तिगत बल्कि सामुदायिक जिम्मेदारी भी वहन करते थे।(पाइन माउंटेन बौद्ध मंदिर.२०२०)

6. शिक्षण प्रविधियों की तुलनात्मक समीक्षा

6.1 नालंदा एवं विक्रमशिला की समानताएँ

दोनों महाविहारों में कई मूलभूत समानताएं थीं। संघीय व्यवस्था, आचार्य-शिष्य परंपरा, वाद-विवाद की पद्धति, बहु-विषयक पाठ्यक्रम और अंतरराष्ट्रीय छात्र समुदाय दोनों की विशेषताएं थीं। दोनों में त्रिपिटक का अध्ययन आधारभूत था और तर्कशास्त्र को विशेष महत्व दिया जाता था। शिक्षण पद्धति में व्यावहारिक प्रशिक्षण, स्वाध्याय, सामुदायिक चर्चा और व्यक्तिगत मार्गदर्शन दोनों में समान रूप से प्रचलित थे। दोनों संस्थानों में नैतिक चरित्र निर्माण और समग्र व्यक्तित्व विकास पर बल दिया जाता था।

6.2 प्रमुख भिन्नताएँ एवं उनके कारण

नालंदा और विक्रमशिला के बीच कुछ महत्वपूर्ण अंतर थे। नालंदा में महायान बौद्ध धर्म की सभी शाखाओं की शिक्षा दी जाती थी, जबकि विक्रमशिला मुख्यतः तांत्रिक बौद्ध धर्म पर केंद्रित था। नालंदा अधिक व्यापक और समावेशी था, जबकि विक्रमशिला अधिक विशिष्ट और गूढ़ था। छात्र संख्या में भी अंतर था - नालंदा में १०,००० छात्र थे। नालंदा अधिक अंतरराष्ट्रीय प्रसिद्धि रखता था, जबकि विक्रमशिला तिब्बत के साथ विशेष संबंध रखता था।

6.3 वैश्विक प्रभाव – चीन, तिब्बत एवं दक्षिण-पूर्व एशिया

दोनों महाविहारों का एशियाई देशों पर गहरा प्रभाव पड़ा। नालंदा के स्नातक चीन, जापान, कोरिया, वियतनाम, थाईलैंड, म्यांमार और श्रीलंका में बौद्ध धर्म का प्रसार करने गए। विक्रमशिला का मुख्य प्रभाव तिब्बत पर था, जहाँ अतिश दीपंकर श्रीज्ञान जैसे महान आचार्य गए। इन संस्थानों से निकले ग्रंथों का चीनी, तिब्बती और अन्य भाषाओं में अनुवाद हुआ। भारतीय कला, स्थापत्य, दर्शन और विज्ञान का प्रसार भी इन केंद्रों के माध्यम से हुआ।

7. बौद्ध शिक्षण पद्धतियों का उत्तरकालीन प्रभाव

7.1 भारतीय शिक्षा परंपरा पर प्रभाव

नालंदा-विक्रमशिला की शिक्षा पद्धतियों ने भारतीय शिक्षा परंपरा को गहरे रूप में प्रभावित किया। वाद-विवाद की परंपरा, समग्र व्यक्तित्व विकास, गुरु-शिष्य संबंध और बहु-विषयक शिक्षा जैसे सिद्धांत बाद की भारतीय शिक्षा प्रणालियों में अपनाए गए। आधुनिक काल में राममोहन राय, रबींद्रनाथ टैगोर और महात्मा गांधी जैसे शिक्षाविदों ने इन प्राचीन आदर्शों से प्रेरणा ली। वर्तमान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० में भी इन सिद्धांतों की छाया दिखाई देती है। (मिश्रा, नंदिता एवं ऐथल, श्रीरामण. २०२३)

7.2 तिब्बती एवं पूर्वी एशियाई शिक्षा प्रणाली पर छाप

तिब्बती बौद्ध धर्म पर विक्रमशिला का प्रभाव आज भी जीवंत है। तिब्बत के प्रमुख मठ गांदेन, सेरा और द्रेपुंग में विक्रमशिला की शिक्षा पद्धति अपनाई गई। दलाई लामा स्वयं कहते हैं कि तिब्बती बौद्ध ज्ञान की जड़ें नालंदा में हैं।

चीन, जापान और कोरिया की बौद्ध परंपराओं में भी इन महाविहारों के ग्रंथों और पद्धतियों का व्यापक उपयोग हुआ। जैन परंपरा में ध्यान और अंतर्दृष्टि की विधियाँ इन्हीं स्रोतों से आईं।

7.3 समकालीन शिक्षाशास्त्र में प्रासंगिकता

आधुनिक शिक्षाशास्त्र में बौद्ध शिक्षा के सिद्धांत अत्यंत प्रासंगिक हैं। माइंडफुलनेस (सचेतना), भावनात्मक बुद्धिमत्ता, समग्र शिक्षा, आलोचनात्मक चिंतन और करुणा-आधारित शिक्षा जैसी आधुनिक अवधारणाएं बौद्ध परंपरा से प्रभावित हैं। समकालीन शिक्षण में तनाव पत्र न, नैतिक मूल्यों का विकास, सामुदायिक भावना और पर्यावरण चेतना जैसे क्षेत्रों में बौद्ध सिद्धांत उपयोगी हैं। कई आधुनिक विश्वविद्यालय इन प्राचीन पद्धतियों को अपने पाठ्यक्रम में शामिल कर रहे हैं। (इंडिया डिजाइनफॉरमेशन, २०२४)

8. निष्कर्ष:

इस शोध से स्पष्ट होता है कि नालंदा एवं विक्रमशिला महाविहारों की शिक्षण प्रविधियाँ अपने समय से कहीं आगे थीं। ये संस्थान न केवल बौद्ध धर्म के प्रसार के केंद्र थे बल्कि मानवीय ज्ञान और संस्कृति के संरक्षक भी थे। इनकी शिक्षा पद्धति में तर्कशीलता, करुणा, व्यावहारिकता और समग्रता का अनूठा संयोजन था। नालंदा की व्यापकता और अंतरराष्ट्रीयता तथा विक्रमशिला की गहनता और विशेषज्ञता दोनों ने मिलकर एक संपूर्ण शैक्षणिक परंपरा का निर्माण किया। इन संस्थानों की सफलता का रहस्य उनकी समावेशी, लचीली और मानव-केंद्रित शिक्षा नीति में था।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली इन प्राचीन संस्थानों से महत्वपूर्ण शिक्षा ले सकती है। व्यक्तिगत मार्गदर्शन, वाद-विवाद की संस्कृति, बहु-विषयक दृष्टिकोण, नैतिक चरित्र निर्माण और वैश्विक दृष्टिकोण जैसे तत्व आज भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। तकनीकी युग में भी मानवीय मूल्यों, भावनात्मक बुद्धि और आध्यात्मिक विकास की आवश्यकता है। नालंदा-विक्रमशिला की परंपरा हमें सिखाती है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्ति नहीं बल्कि संपूर्ण मानव बनना है।

इस क्षेत्र में और भी व्यापक शोध की संभावनाएं हैं। नालंदा-विक्रमशिला की शिक्षण विधियों का आधुनिक न्यूरो-साइंस के साथ तुलनात्मक अध्ययन, इन संस्थानों के पाठ्यक्रम का विस्तृत विश्लेषण, तिब्बती और चीनी स्रोतों से नई जानकारी की खोज जैसे विषय भविष्य के अनुसंधान के लिए महत्वपूर्ण हैं। समकालीन शिक्षा संस्थानों में इन पद्धतियों के व्यावहारिक क्रियान्वयन का अध्ययन भी आवश्यक है। यह शोध न केवल भारतीय शिक्षा के स्वर्णिम अतीत को पुनर्जीवित करने में सहायक होगा बल्कि विश्व शिक्षा के उज्ज्वल भविष्य का मार्ग भी प्रशस्त करेगा।

संदर्भ सूची:

[1] आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया. २०११. विश्व धरोहर स्थल - अजंता गुफाएँ. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण. 9 नवंबर 2015 को एक्सेस किया गया: http://asi.nic.in/asi_monu_whs_ajanta.asp.

[2] इंडिया,दिस,इन्फॉर्मेशन(२०२४) https://www.indiavsdisinformation.com/hi/20240628/nalanda-university-testament-to-achievements-of-ancient-india-s-educational-system

[3] आइआइटी-हैदराबाद,नालंदामहाविहार https://hiwiki.iiit.ac.in/index.php/%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%B2%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A4%BE_%E0%A4%AE%E0%A4%B9%E0%A4%BE%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%B9%E0%A4%BE%E0%A4%B0

[4] कजिन्स एल.एस. भारतीय बौद्ध धर्म का इतिहास, एसआर गोयल द्वारा। पृष्ठ 1, 532, 8 पृष्ठ। मेरठ, कुसुमांजलि प्रकाशन, 1987. जर्नल ऑफ द रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। 1989;121(1):168-169. doi:10.1017/S0035869X00168212

[5] कुमार. पिंटू २०११. प्राचीन नालंदा महाविहार: संस्थागत शिक्षा की शुरुआत. जर्नल ऑफ द वर्ल्ड यूनिवर्सिटीज फोरम, खंड 4,. doi:10.18848/1835-2030/CGP/v04i01/56731

[6] नालंदा महाविहार.(२०२५) उपलब्ध: https://en.wikipedia.org/wiki/Nalanda_mahavihara

[7] पाइन माउंटेन बौद्ध मंदिर.२०२० https://pinemtnbuddhisttemple.org/recent-articles

[8] बर्ग्रेस , जेम्स. १८८३. बौद्ध गुफा मंदिर और उनके शिलालेख, पश्चिमी भारत पुरातत्व सर्वेक्षण श्रृंखला, खंड IV. लंदन: Trubner & Co.

[9] हार्वे, पी. २०१२. बौद्ध धर्म का परिचय: शिक्षाएँ, इतिहास और प्रथाएँ (दूसरा संस्करण). कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

[10] ह्वेनत्सांग,विकिपीडिया२०२५ https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B9%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A5%87%E0%A4%A8_%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%82%E0%A4%97

[11] Mishra, Nandita & Aithal, Sreeramana. 2023. प्राचीन भारतीय शिक्षा: आधुनिक शिक्षा प्रणाली में इसकी प्रासंगिकता और महत्व. अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ऑफ केस स्टडीज़ इन बिज़नेस, आईटी और एजुकेशन, पृष्ठ 238-249. doi: 10.47992/IJCSBE.2581.6942.0271.